विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

मास्टर ऑफ़ फ़िलॉसफ़ी

कला संकाय

एम. फ़िल्.

हिन्दी

सत्र 2016–2017

पाठ्यक्रम तथा अनुशंसित पुस्तकें

एम. फ़िल्, (हिन्दी)

निर्धारित पाठ्यक्रम

सत्र 2016–2017

द्वितीय सिमेस्टर

इस सिमेस्टर में निम्नलिखित प्रश्नपत्र होंगे :–

प्रश्नपत्र–1	शोधप्रविधि	100 अंक
प्रश्नपत्र–2	आलोचनाशास्त्र	100 अंक
प्रश्नपत्र–3	दर्शन और हिन्दी साहित्य का इतिहास	100 अंक
		कुल 300 अंक

तृतीय सिमेस्टर

इस सिमेस्टर में निम्नलिखित प्रश्नपत्र होंगे :–

प्रश्नपत्र–1	परिसंवाद (सेमिनार)(दो परिसंवाद)	100 अंक
प्रश्नपत्र–2	अधिनिबन्ध	100 अंक
प्रश्नपत्र–3	मौखिकी	100 अंक
		कुल 300 अंक

एम. फ़िल्, (हिन्दी) पाठ्यक्रम सत्र 2016–2017

द्वितीय सिमेस्टर

प्रश्नपत्र–1 शोधप्रविधि

1 साहित्यिक अनुसंधान

शोध–व्युत्पत्ति, अर्थ एवं स्वरूप; शोध के पर्याय : अनुसंधान, गवेषणा, अन्वेषण, अनुशीलन आदि। समीक्षा, खोज एवं शोध का अंतर और समन्वित रूप।

शोध का प्रयोजन और प्रकार।

साहित्यिक शोध–उसके भेद, प्रवृत्ति और विशेषताएँ।

शोधक– व्यक्तित्व और अर्हताएँ।

निर्देशक– व्यक्तित्व और अर्हताएँ

शोध प्रक्रिया – विषयचयन और उसकी प्रणालियाँ, विषय की रूपरेखा, सामग्री–संकलन,संकलित तथ्यों और सामग्री का परीक्षण, संयोजन, व्यवस्थापन और विभिन्न अध्यायों के अनुरूप उसका संग्रथन।

शोध प्रबन्ध और उसके अंग – अनुक्रमणिका, भूमिका, अध्याय लेख (शोधप्रबन्ध के अध्याय), उपसंहार, परिशिष्ट, शुद्ध टंकण।

उद्धरण – नाम, लेखक, प्रकाशक, पृष्ठ, सन् तथा संस्करण

परिशिष्ट – संदर्भ ग्रंथ–सूची (आधार और सहायक ग्रंथ तथा पत्र–पत्रिकाएँ, एवं अन्य)

2 पाठानुसंधान

पाठानुसंधान : अर्थ और स्वरूप ।

पाठानुसंधायक की अर्हताएँ।

पाठानुसंधान के सिद्धांत : सामग्री–संकलन, पाठचयन, पाठसुधार और उच्चतर आलोचना।

3 भाषानुसंधान

भाषा सम्बन्धी साहित्यिक और व्याकरणिक अनुसंधान।

भाषा सम्बन्धी शैलीवैज्ञानिक अनुसंधान।

4 लोकभाषा और लोकसाहित्य सम्बन्धी अनुसंधान

लोकसाहित्य के विविध रूप–लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य आदि।

मालवी लोकसाहित्य के विविध आयाम।

5 हिन्दी साहित्य में शोध का इतिहास, समस्याएँ और सुझाव

विभाजित इकाइयाँ						अंक
1	शोधप्रविधि	.....	.....	.....	.....	30
2	पाठानुसंधान	.....	.....	.....	.....	20
3	भाषानुसंधान	.....	.....	.....	.....	15
4	लोक भाषा एवम् लोक साहित्यानुसंधान			.....	.....	15
5	हिन्दीसाहित्य में शोध का इतिहास समस्याएँ और सुझाव				.....	20

इस प्रश्नपत्र में छह प्रश्न (प्रथम से दो, शेष से एक–एक) आंतरिक विकल्प के साथ पूछे जायेंगे।

संदर्भग्रंथ

1 अनुसंधान का स्वरूप– संपा. डॉ.सावित्री सिन्हा और डॉ. विजयेन्द्र स्नातक

2 शोधसिद्धांत–डॉ. नगेन्द्र

3 अनुसंधान की प्रकिया– संपा. डॉ. सावित्री सिन्हा और डॉ. विजयेन्द्र स्नातक

4 अनुसंधान का व्यावहारिक स्वरूप – डॉ. उर्वशी जे. सूरती

5 शोधप्रविधि–डॉ. विनयमोहन शर्मा

6 शोधप्रविधि एवं प्रकिया–डॉ. रामकुमार खण्डेलवाल तथा चन्द्रभान रावत

7 शोधप्रकिया और विवरणिका–डॉ. सरनामसिंह शर्मा

8 नवीन शोधविज्ञान–डॉ. तिलक सिंह

9 हिन्दी के स्वीकृत शोधप्रबन्ध – डॉ. उदयभानु सिंह

10 हिन्दी के स्वीकृत शोधप्रबन्ध – कृष्णाचार्य

11 शोध संदर्भ (चार भाग) – डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल और डॉ. मीना अग्रवाल

12 भारतीय पाठालोचन की भूमिका– सुमित्र मंगेश कात्रे, अनुवादकः
डॉ. उदयनारायण तिवारी

13 पाठ–सम्पादन के सिद्धांत – डॉ. कन्हैया सिंह

14 पाण्डुलिपि सम्पादन कला – संपा. डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

15 हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा – डॉ. मनमोहन सहगल

16 अनुसंधान : प्रविधि और क्षेत्र – डॉ. राजमल बोरा

17 अनुसन्धान : प्रविधि और प्रक्रिय – डॉ. राजेन्द्र मिश्र

18 पाठालोचन – मिथिलेशकांति वर्मा और विमलेशकांति वर्मा

19 हिन्दी व्याकरण – पं. कामताप्रसाद गुरु

20 हिन्दी शब्दानुशासन – पं. किशोरीदास वाजपेयी

21 लोक साहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र

22 लोक साहित्य की भूमिका – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय

23 लोक साहित्य विमर्श – डॉ. श्याम परमार

24 मालवी लोक–साहित्य – डॉ. श्याम परमार

25 मालवी संस्कृति और साहित्य – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

26 लोक भाषा और साहित्य – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

27 मालवा का लोकनाट्य माच और अन्य विधाएँ –संपा. डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा

28 अवन्ती क्षेत्र और सिंहस्थ महापर्व – संपा. डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, डॉ. श्यामसुंदर निगम, डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, डॉ. शिव चौरसिया और डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा

29 सर्जनात्मक भाषा और आलोचना – प्रो. बी. एल. आच्छा

30 चंदन चौक – संपा. डॉ. विद्यानिवास मिश्र

31 हिन्दी की जनपदीय कविता – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

32 लोक और लोक का स्वर – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

33 मालवी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्यामसुंदर निगम, संपा. देवेंद्र दीपक

34 चितरावन : मालवा की लोक चित्रकला – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

35 प्रामाणिक मालवी हिन्दी कोश – डॉ. प्रह्लादचन्द्र जोशी

36 मालवी लोककथाएँ – डॉ. प्रह्लादचन्द्र जोशी

37 मालवी और उपबोलियों का व्याकरण– डॉ. प्रह्लादचन्द्र जोशी

38 लोक–संस्कृति की रूपरेखा – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय

39 मालवी लोकगीत : एक विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय

40 लोकायन – डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय

41 मालवी और उसका साहित्य–डॉ. श्याम परमार

42 मालवी की उत्पति और विकास – डॉ. बंशीधर

43 सोंधवाड़ी साहित्य, संस्कृति और व्याकरण – डॉ. प्रह्लादचन्द्र जोशी, संपा. डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

44 मालवी लोकगीत–संक. टीकमचन्द भावसार 'बा', संपा. डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

45 मध्यप्रदेश का लोक–नाट्य माच – डॉ. शिवकुमार मधुर

46 मालवासुत पं. सूर्यनारायण व्यास – संपा डॉ. हरीश निगम, डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा, डॉ हरीश प्रधान

47 ऊदल दातार लोक देवता देवनारायण – डॉ. पूरन सहगल

48 मालवी लोक साहित्य में उपलब्ध विरद बखान और गाथासाहित्य – डॉ. पूरन सहगल

49 लोक देवता जूण कुँवर –डॉ. पूरन सहगल

50 लागी सबद कटार (मालवी का दोहा) – संपा डॉ. पूरन सहगल

51 निमाड़ी साहित्य का इतिहास – डॉ. श्रीराम परिहार, संपा. डॉ. देवेन्द्र दीपक

52 मालवी कहावत कोश – निर्मला राजपुरोहित

53 मालवा के इतिहास एवं संस्कृति के कतिपय पहलू –संपा. डॉ. श्यामसुंदर निगम

54 मालवी लोक गीतों की अन्तर्चेतना – डॉ. शशि निगम

55 अनादि उज्जयिनी (तीन खण्ड) – डॉ. रमेश निर्मल

56 वीणा – मालवी अंक (पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध) –संपा. मोहनलाल उपाध्याय 'निर्मोही'

57 जनधर्म – मालवी विशेषांक (दो खण्ड) – संपा. डॉ. श्यामसुंदर निगम।

58 मालवी भाषा और साहित्य – संपा. डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

प्रश्नपत्र–2 आलोचनाशास्त्र

खण्ड–1 भारतीय आलोचनाशास्त्र

पारम्परिक भारतीय काव्यशास्त्र :

काव्य स्वरूप, प्रयोजन, हेतु , प्रभेद

काव्यात्मवाद – अलंकारमत, रीतिमत, ध्वनिमत, रससिद्धांत, वक्रोक्ति और औचित्यमत।

शब्दशक्ति–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

छन्द, गुण और दोष – स्वरूप, प्रयोजन और सामान्य परिचय।

खण्ड–2 पाश्चात्य आलोचनाशास्त्र

(क) प्राचीन काव्य–चिंतन – सामान्य प्रवृत्तियाँ, प्लेटो के काव्यसिद्धांत, अरस्तू के काव्यसिद्धांत–अनुकरण, विरेचन और त्रासदी, लोंजाइनस का उदात्तवाद, क्लासिकल चिंतन का विशिष्ट प्रदेय, दाँते के काव्यसिद्धांत का सामान्य परिचय।

(ख) 1 आधुनिक काव्य–चिंतन – रोमेंटिक काव्यधारा, आभिजात्यवाद, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, अतियथार्थवादी, अस्तित्ववादी, नई समीक्षा, उत्तर आधुनिकतावाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद और विखंडनवाद।

2 प्रमुख काव्य–चिंतक – क्रोचे, आई. ए. रिचर्ड्स और टी. एस. इलियट।

खण्ड–3 रीतिकालीन और आधुनिक काव्यशास्त्रीय चिंतन

(क) रीतिकालीन काव्यशास्त्र–सामान्य परिचय।

(ख) आधुनिक हिन्दी काव्यशास्त्र :

1 शुक्लयुग – सामान्य परिचय

2 शुक्लोत्तरयुग–शास्त्रीय, स्वच्छन्दतावादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, तुलनात्मक, श्शैलीवैज्ञानिक, प्रयोगवादी, नई समीक्षा, स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श, साहित्य एवं अन्य कलाओं का अन्तःसंबंध तथा अन्तरानुशासनिक अध्ययन।

	विभाजित इकाइयाँ	अंक
1	पारम्परिक भारतीय काव्यशास्त्र	40
2	पाश्चात्य आलोचनाशास्त्र	40
3	रीतिकालीन और आधुनिक काव्यशास्त्रीय चिंतन	20

इस प्रश्नपत्र में आंतरिक विकल्पों के साथ कुल पाँच प्रश्न होंगे।

(प्रथम और द्वितीय से दो–दो तथा तृतीय इकाई से एक)

सन्दर्भग्रंथ :

1 भारतीय काव्यशास्त्र – संपा. डॉ. उदयभानु सिंह

2 भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. ओम्प्रकाश

3 भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र

4 भारतीय साहित्यशास्त्र – डॉ. गणेश त्र्यंबक देशपाण्डे

5 रससिद्धांत – डॉ. नगेन्द्र

6 भारतीय काव्यशास्त्र (दो भाग) –पं. बलदेव उपाध्याय

7 आनन्दवर्धन – डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी

8 भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्यपरंपरा –डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी

9 सहृदय और साधारणीकरण – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

10 सहृदय – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

11 काव्यशास्त्र और काव्य – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी

12 काव्यप्रकाश का दार्शनिक धरातल – डॉ. बालकृष्ण शर्मा

13 भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. सत्यदेव चौधरी

14 रस–सिद्धांत : मूल, शाखा, पल्लव और पतझड़– डॉ. प्रेमलता शर्मा

15 साहित्य का प्रयोजन – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

16 भारतीय काव्यविमर्श – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

17 रसविमर्श – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

18 भारतीय साहित्यदर्शन – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

19 काव्यतत्त्व–विमर्श – डॉ. रागमूर्ति त्रिपाठी

20 भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. योगेद्रप्रताप सिंह

21 भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत

22 साहित्य–सिद्धांत – डॉ. रामअवध द्विवदी

23 भारतीय समीक्षा सिद्धांत – डॉ. सूर्यनारायण द्विवेदी

24 भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र

25 रससिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र – डॉ. निर्मला जैन

26 रीतिकालीन कवियों के काव्यसिद्धांत – किशोरीलाल गुप्त

27 रीतिकालीन प्रमुख आचार्य – डॉ. सत्यदेव चौधरी

28 अभिनव साहित्य चिंतन – डॉ. भगीरथ दीक्षित

29 राग बोध और रस – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

30 समीक्षालोक – डॉ. भगीरथ दीक्षित

31 हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास – डॉ. भगीरथ मिश्र

32 हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास – डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र

33 हिन्दी आलोचना – डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी

34 पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद – डॉ. भगीरथ मिश्र

35 हिन्दी आलोचना का विकास – डॉ. नंदकिशोर नवल

36 हिन्दी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ – डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र

38 रीतिकालीन कवियों की मौलिक देन – डॉ. किशोरीलाल

39 हिन्दी आलोचना के आधार स्तम्भ – डॉ. रामेश्वरलाल खंडेलवाल

40 शब्दशक्ति सम्बन्धी भारतीय और पाश्चात्य अवधारणा तथा हिन्दी काव्यशास्त्र – डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा

41 भारतीय नाट्यशास्त्र की परंपरा और विश्व–रंगमंच –डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी

42 मम्मट – डॉ. जगन्नाथ पाठक

43 दंडी – डॉ. जयशंकर त्रिपाठी

44 काव्यालंकार – आचार्य भामह – संपा. देवेंद्रनाथ शर्मा

45 पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेंद्रनाथ शर्मा

46 सर्जनात्मक भाषा और आलोचना – प्रो. बी.एल. आच्छा।

47 रीतिविज्ञान – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

48 शैलीविज्ञान और आलोचना की नई भूमिका – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

49 साहित्य का भाषिक चिंतन – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

50 साहित्य : अध्ययन की दृष्टियाँ – संपा. उदयभानु सिंह, हरभजन सिंह, रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

51 शैलीविज्ञान – सुरेशकुमार

52 शैलीविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी

53 शैलीविज्ञान – डॉ. नगेंद्र

54 पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास – डॉ. तारकनाथ बाली

55 पाश्चात्य साहित्यचिंतन – निर्मला जैन और कुसुम बाँठिया

56 विश्वेश्वर से महाकालेश्वर (आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी अभिनन्दन ग्रन्थ) –संपा. डॉ. विद्यानिवास मिश्र और डॉ. जगदीश शर्मा

57 अर्द्धशती का भारतीय काव्यचिंतन : पक्ष और विपक्ष – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

58 संस्कृत नाट्य–मीमांसा – डॉ. केशवराव मुसलगाँवकर

59 भरत और भारतीय नाट्यकला – सुरेंद्रनाथ दीक्षित

60 भारतीय नाट्य : स्वरूप और प्रयोग – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी

61 नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक – आ. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

62 लालित्य तत्त्व – आ. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

63 भारतीय सौंदर्य दर्शन – ब्रजमोहन चतुर्वेदी

64 अनछुए बिंदु – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

प्रश्नपत्र–3 दर्शन और हिन्दी साहित्य का इतिहास

दर्शन – शब्द, अर्थ, परिभाषा, दर्शन और फिलॉसफ़ी

1 भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय, बौद्धदर्शन, जैनदर्शन, आगमिक दर्शन, अद्वैत, शुद्धाद्वैत, विशिष्टाद्वैत, प्रेमाश्रयी सूफ़ी शाखा–जायसी का दर्शन, आधुनिक दर्शन–आर्यसमाज, नव्य वेदान्त, अरविन्द और गाँधीदर्शन।

2 पाश्चात्य दर्शन

अरस्तू, प्लेटो, मार्क्स, विकासवाद, डार्विन, फ्रायड और अस्तित्त्ववादी दर्शन।

3 हिंदी साहित्य का इतिहास

साहित्य का इतिहास और हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्येतिहास के सम्बन्ध में विविध दृष्टिकोण, हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन, आधारभूत सामग्री, काल विभाजन और नामकरण, हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास।

आदिकाल–आदिकालीन सांस्कृतिक संदर्भ, प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, प्रमुख रचनाकार और उनकी कृतियाँ, काव्यरूप और भाषाशैली। भक्तिकाल–भक्तिकालीन सांस्कृतिक संदर्भ, भक्ति आन्दोलन, भक्तिकालीन प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ–संत काव्यधारा, सूफ़ी काव्यधारा, कृष्णभक्ति काव्यधारा –प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी कृतियाँ, काव्यरूप और भाषाशैली।

रीतिकाल–रीतिकालीन सांस्कृतिक संदर्भ, प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, रीतिमुक्त, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीति–भक्ति, शृंगारेतर वीर, भक्ति, नीति आदि के प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ, काव्यरूप और भाषाशैली।

आधुनिक काल – आधुनिककालीन सांस्कृतिक संदर्भ, आधुनिक साहित्य को प्रभावित करनेवाली प्रमुख विचारधाराएँ, नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन, भारतेन्दुयुग, छायावादीयुग, प्रगतिशील कविता, प्रयोगवाद, नयी कविता, अन्य विविध किसिम–किसिम की कविताओं के आन्दोलन।

प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ, काव्यरूप और भाषाशैली।

गद्य साहित्य–हिन्दी निबंध, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, आलोचना और पत्रकारिता का ऐतिहासिक विकास, प्रतिनिधि रचनाकार, साहित्यरूप, भाषाशैली।

	विभाजित इकाइयाँ	अंक
1	भारतीय दर्शन	30
2	पाश्चात्य दर्शन	30
3	हिन्दी साहित्य का इतिहास	40

इस प्रश्नपत्र मे आंतरिक विकल्पों के साथ कुल 6 प्रश्न (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खण्ड से दो–दो) पूछे जायेंगे।

संदर्भग्रंथ

1 भारतीय दर्शन (दो भाग)– डॉ. राधाकृष्णन्

2 भारतीय दर्शन – श्री सतीशचंद्र चटर्जी एवं श्री धीरेन्द्रमोहन दत्त

3 भारतीय दर्शन– आ. बलदेव उपाध्याय

4 अद्वैतवाद – गंगाप्रसाद उपाध्याय

5 विश्व धर्म–दर्शन – साँवलिया बिहारीलाल वर्मा

6 संस्कृति के चार अध्याय – रामधारीसिंह 'दिनकर'

7 भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र

8 काश्मीर की शैव परंपरा – डॉ. रामचंद्र द्विवेदी

9 तंत्र, कला और आस्वाद – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

10 भारतीय तंत्रविज्ञान – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

11 ऐतिहासिक संदर्भ में शाक्ततंत्र – डॉ. मुनीशचंद्र जोशी

12 भारतीय तंत्रशास्त्र – संपा. ब्रजवल्लभ द्विवेदी

13 पाश्चात्य दर्शन की रूपरेखा – जयदेव सिंह

14 पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास – गुलाबराय

15 पाश्चात्य आधुनिक दर्शन की समीक्षात्मक व्याख्या – याकूब मसीह

16 पाश्चात्य दर्शन का इतिहास – जमनाप्रसाद अवस्थी

17 समकालीन भारतीय दर्शन – संपा. डॉ. लक्ष्मी सक्सेना, सभाजीत मिश्र, शिवानंद शर्मा

18 भारतीय दर्शनिक निबन्ध – संपा. डॉ. डी.डी. बंदिष्टे और डॉ. रमाशंकर शर्मा

19 बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास – डॉ. गोविन्दचन्द्र पांडे

20 समकालीन भारतीय दर्शन – बसंतकुमार लाल

21 समकालीन पाश्चात्य दर्शन – बसंतकुमार लाल

22 पूर्वी और पश्चिमी दर्शन – डॉ. देवराज

23 पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास – याकूब मसीह

24 अनुभववाद – संपा. यशदेव शल्य

25 अस्तित्त्ववाद – महावीर दाधीच

26 मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विवेचन – सीताराम जायसवाल

27 श्रीअरविंद – मनोज दास

28 स्वामी दयानन्द सरस्वती – विष्णु प्रभाकर

29 पाश्चात्य दर्शन का समस्यात्मक विवेचन – डॉ. रामनाथ शर्मा

30 भारतीय दर्शन के मूल तत्व – डॉ. रामनाथ शर्मा

31 पाश्चात्य दर्शन का ऐतिहासिक विवेचन – डॉ. रामनाथ शर्मा

32 अद्वैत वेदांत : इतिहास तथा सिद्धांत – डॉ. राममूर्ति शर्मा

33 भारतीय दर्शन की रूपरेखा – एम. हिरियन्ना

34 भारतीय दर्शन : सम्प्रदाय और समस्याएँ – डॉ. सुरेंद्र वर्मा

35 दर्शन, मानव और समाज – डॉ. राज्यश्री अग्रवाल

36 जैन दर्शन – मोहनलाल मेहता
37 जैन दर्शन की रूपरेखा – एस. गोपाल
38 भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन
39 बौद्ध दर्शन मीमांसा – आ. बलदेव उपाध्याय
40 बौद्ध धर्म दर्शन – आ. नरेन्द्रदेव
41 श्री शंकराचार्य – आ. बलदेव उपाध्याय
42 शंकराचार्य : विचार और संदर्भ – डॉ. गोविन्दचन्द्र पांडे
43 आचार्य वल्लभ और उनका दर्शन – राजलक्ष्मी वर्मा
44 कश्मीर शैव दर्शन (दो भाग) – डॉ. कैलाशपति मिश्र
45 अभिनवगुप्त – डॉ. गणेश त्र्यंबक देशपांडे, अनु. मिथिलेश चतुर्वेदी
46 दर्शनशास्त्र का परिचय – जार्ज टामस व्हाइट पैट्रिक
47 दर्शनशास्त्र का परिचय – डॉ. राज्यश्री अग्रवाल
48 भारतीय दर्शन – संपा. नंदकिशोर देवराज
49 हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास -- जार्ज अब्रहम ग्रियर्सन
50 मिश्रबन्धु विनोद – मिश्रबन्धु
51 हिन्दी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल
52 हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
53 हिन्दी साहित्य की भूमिका – आ. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी
54 हिन्दी साहित्य का आदिकाल – आ.हज़ारीप्रसाद द्विवेदी
55 हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास – आ. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी
56 हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) – पं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र
57 हिन्दी साहित्य का इतिहास – संपा. डॉ. नगेन्द्र
58 हिन्दी साहित्येतिहास दर्शन – पं. नलिनविलोचन शर्मा
59 हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
60 हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास(प्रकाशित सभी खण्ड)– प्रका.नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

61 हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

62 द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

63 आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद – डॉ. शिवप्रसाद सिंह

64 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

65 हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

66 हिन्दी साहित्य का पुनरालोकन – डॉ. विद्यानिवास मिश्र

67 हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचन्द्र तिवारी

68 हिन्दी उपन्यास – डॉ. रामचन्द्र तिवारी

69 हिन्दी निबंध और निबंधकार – डॉ. रामचन्द्र तिवारी

70 हिन्दी उपन्यास का इतिहास – डॉ. गोपाल राय

71 हिन्दी उपन्यास का विकास – मधुरेश

72 हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश

73 हिन्दी काव्य का विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

74 हिन्दी कहानी का इतिहास – डॉ. गोपाल राय

एम. फ़िल्, (हिन्दी) पाठ्यक्रम सत्र 2016–2017

तृतीय सिमेस्टर

प्रश्नपत्र–1 परिसंवाद

परिसंवाद के लिये सौ अंक निर्धारित हैं। इस प्रश्नपत्र के लिये प्रत्येक छात्र को दो शोधनिबंध लिखकर उनका वाचन निर्धारित समय पर करना अनिवार्य होगा। प्रत्येक छात्र को प्रत्येक निबंध वाचन के पश्चात् परिचर्चा में भाग लेना अनिवार्य है।

प्रश्नपत्र–2 अधिनिबंध

इस प्रश्नपत्र के लिये कुल एक सौ अंक निर्धारित हैं। अधिनिबंध के लिये 100–150 पृष्ठों की सीमा निर्धारित है। अधिनिबंध की तीन–तीन टंकित प्रतियाँ निर्धारित तिथि तक कार्यालय में प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। अधिनिबंध के लिये परीक्षार्थी अपने निर्देशक के निर्देशन में शोधकार्य सम्पन्न करेगा।

प्रश्नपत्र–3 मौखिकी

मौखिकी परीक्षा में अधिनिबंध से ही सम्बद्ध प्रश्न पूछे जायँगे। मौखिक परीक्षा के उपरांत छात्रों के अधिनिबंध एवम् परिसंवाद की एक–एक प्रति उनके निर्देशक को लौटा दी जाएगी।